दो दिवसीय मेन्टर्स प्रशिक्षण (फेम सदस्यो के साथ)

दिनाकः 29–30 मई 2017

स्थानः सप्तर्षि सेवा केन्द्र, रांची (झारखण्ड)

संक्षिप्त रिपोर्ट

दिनांक – 29.05.17

सत्र 1 – स्वागत, परिचय, उद्देश्य व प्रतिभागियों की अपेक्षाएं

दो दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत प्रतिभागियों के स्वागत व परिचय के साथ की गई जिसके तहत सभी प्रतिभागियों द्वारा अपना–अपना परिचय दिया गया। इसके बाद फैसलिटेटर द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट किया गया जो निम्न प्रकार से था –

- भेदभावपूर्ण व हिंसा आधारित विभिन्न सामाजिक मान्यताओं व उनके कारणों व असर पर जानकारी व समझ बनाना।
- सामाजिक बदलाव हेतु प्रतिभागियो की भूमिका व कार्य की सामूहिक रणनीति बनाना।

प्रतिभागियों की अपेक्षाएं –

- दूसरे साथियों से नई जानकारी सीखना
- पुरूषवादी सोच में कैसे बदलाव ला सकते हैं?
- समानता कैसे लाये/भेदभाव को कैसे कम कर सकते हैं?
- जेण्डर समानता के कानून प्राविधान क्या हैं तथा इसकी जानकारी कैसे दें?
- महिला–पुरूष समानता को गांव में कैसे बढ़ायें?
- लैंगिक न्याय में पुरूषों व लड़कों की भूमिका
- पुरूषत्व क्या है?
- लैगिंक न्याय व मर्दानगी कैसे काम करता हैं?
- मर्दानगी से सम्बंधित आ रही चुनौतियों को कैसे हल करें?
- महिलाओं पर हिंसा के मुद्दे पर पुरूषों को कैसे जागरूक करें?
- महिलाओं पर हिंसा को कैसे रोका जा सकता है?

सत्र 2 – सत्ता, सत्ता सम्बंध और जेण्डर आधारित हिंसा

सत्ता के स्रोत :– प्रतिभागियों के साथ चर्चा करते हुए सत्ता के विभिन्न स्रोतो की पहचान की गई जो निम्न प्रकार से निकलकर आये –

संपत्ति, उम्र, समूह की ताकत, शारीरिक बनावट, बहुसंख्यक होना, पुरूष होना, उच्च जाति का होना, राजनैतिक पहुंच, उच्च वर्ग, जानकारी व ज्ञान, अनुभव आदि।

फैसलिटेटर द्वारा स्पष्ट किया गया कि हर व्यक्ति के पास किसी न किसी रूप में अलग–अलग सत्ता होती है लेकिन सामाजिक तौर पर देखें तो जो व्यक्ति सबसे गरीब है, संसाधनों की कमी है, अल्पसंख्यक है तथा जिसकी राजनैतिक पहुंच व शिक्षा की कमी है वह सबसे पीछे रह जाता है और इनमें भी महिलाएं सबसे पीछे रह जाती है जिससे वे अपने अधिकारों को आनंद नही ले पाती तथा विकास के अवसरों से वंचित रह जाती है। पुरूषों के ऊपर सबसे ज्यादा दबाव अपनी सत्ता को बनाये रखने का होता है, उन्हें किसी प्रकार की चुनौती न मिले इसलिए वे लोगों को दबाने व सत्ता को बनाये रखने के लिए हिंसा का सहारा लेने लगते हैं।

ज्यादातर देखने में आता है कि हम अपनी सत्ता का प्रयोग नकारात्मक तरीके से करते हैं जिसके कारण कमजोर वर्ग व महिलाओं के साथ भेदभाव व हिंसा को बढ़ावा मिलता है। इस पर प्रतिभागियों

द्वारा अपने अनुभवों के आधार पर विभिन्न उदाहरणों को रखा गया। हम अपनी सत्ता का इस्तेमाल उनके साथ आगे बढ़ाने में भी कर सकते हैं। घर तथा समाज के स्तर पर पुरूषों के अपनी इन सत्ता के आधार पर ही अलग–अलग तरीके से हिंसा की जाती है। इसलिए कोई भी व्यक्ति अपनी सत्ता का इस्तेमाल लोगों की भलाई, उन्हें विकास के मौके उपलब्ध कराने तथा भेदभाव व महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा को कम करने में कर सकते हैं।

सत्र 3 – जेण्डर भेदभाव का महिलाओं व पुरूषों पर असर

जेण्डर आधारित भेदभाव का महिलाओं व पुरूषों पर क्या असर पड़ता है इस पर समझ बनाने के लिए प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित किया गया। समूह चर्चा और प्रस्तुतीकरण के बाद निम्न बाते निकल कर आई –

महिलाओं पर पड़ने वाला असर :–

- अपनी इच्छा प्रकट नही कर पाना
- पुरूषों पर हमेशा आश्रित रहना
- अपनी बातों को न कह पाना अर्थात बातों को छिपाना
- सामाजिक कार्यो में भागीदारी नहीं होना
- पुरूषों के प्रति डर की भावना
- दबावपूर्ण जिम्मेदारी को निभाना
- रिश्तों में दरार आना
- समाज में डर की भावना व माहौल बनना

पुरूषों पर पड़ने वाला असर :–

- दुःख को व्यक्त न कर पाना
- मानसिक तनाव
- पैसे कमाने का बोझ
- परम्पराओं को बनाये रखने का दबाव
- जोखिम उठाने पर समस्याओं में पड़ना
- घर की जरूरतों को पूरा करने का दबाव
- लड़कियों पर मर्दानगी दिखाने का दबाव व खुद का नियत्रंण खो देना

सत्र 4 – मर्दानगी व मर्दानगी का निर्माण

मर्दानगी क्या है?– प्रतिभागियों के साथ चर्चा करते हुए जानने का प्रयास किया गया कि जब हम मर्दानगी कहते हैं तो हमारे दिमाग में क्या छवि बनती है? जिस पर निकलने वाली बातों को चार्ट पर लिखने का प्रयास किया गया –

रक्षक, नियत्रंक,वर्चस्व बनाये रखने वाला, हिंसा करने वाला, स्वंय का निर्णय लेने वाला, मर्द को दर्द नही, कठोर, भावुक न होना, हमेशा सफल होने वाला, बच्चे पैदा करने वाला, संतुष्ट करने वाला, बेटा पैदा करने वाला आदि।

इसके बाद स्पष्ट किया गया कि मर्दानगी की सोच बदलती रहती है। यह अलग–अलग सामाजिक व सास्कृतिक स्थिति में अलग–अलग तरीके से परिभाषित होती है अर्थात अलग–अलग तरीके से व्यवहार किया जाता है। लेकिन इसके ज्यादातर अभ्यास नकारात्मक तरीके से अपने प्रभुत्व को स्थापित करने के लिए पुरूषों द्वारा किया जाता है। मर्दानगी के निम्न स्वरूपों पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया –

- धौसपूर्ण/आक्रामक मर्दानगी
- सामूहिक मर्दानगी
- वैकल्पिक मर्दानगी

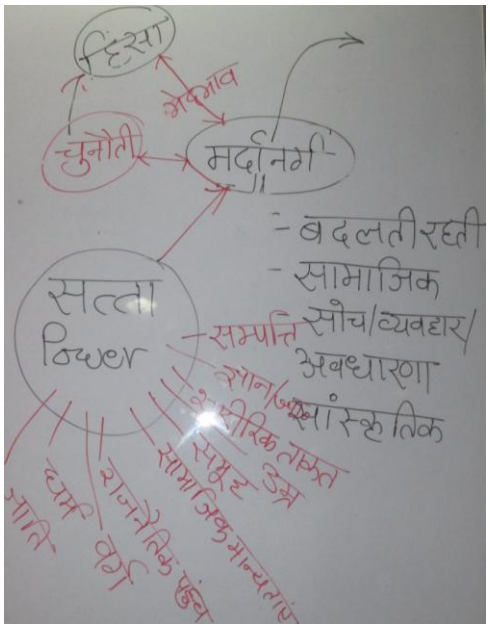

मर्दानगी का निर्माण – हमारे समाज में मर्दानगी का निर्माण किस तरीके से अलग–अलग स्तर पर होता है तथा कैसे इसका बढ़ावा मिलता है, इस पर प्रतिभागियों के साथ खुली चर्चा की गई जिसके बाद विभिन्न संस्थाएं जो मर्दानगी की सोच को बढ़ावा देती है उन पर समझ बनाने का प्रयास किया गया।

- धर्म – धर्म ग्रन्थों में पुरूषों का महिमामण्डन, दूसरे धर्म का नीचा दिखाना, स्त्री के त्याग व सेवा भाव का महिमामंडन (सती प्रथा, व्रत, तलाक–जुबानी, देवी माता)
- राजनीति – राजनीति में महिलाओं की अपरिपक्व छवि को दिखाना व मौको से वंचित रखना
- मीड़िया – फिल्म व धारावाहिकों में महिलाओं की गंदी व त्याग करने वाली छवि को दिखाना, गीत, विज्ञापनों में महिलाओं को उपभोग की वस्तु दिखाना, अखबारों में सेक्स सम्बंधी विज्ञापनो की भरमार
- परिवार/समाज – बाल विवाह, भेदभाव, अंधविश्वास व कुप्रथावों को बढ़ावा, दहेज
- प्रशासन/सरकार – हिंसा, महिलाओं के साथ भेदभाव, कानूनों का भेदभावपूर्ण क्रियान्वयन
- बाजार – धार्मिक मान्यताओं को बढ़ावा देना, महिलाओं की छवि को गिराना
- शिक्षा – भिन्न मानक, महिलाओं की छवि दोयम् दर्जे की स्थापित करना, पाठ्यक्रमों में दोहरा मापदण्ड, पुरूषों को ज्ञानी व रक्षक के रूप में पेश करना

पुरूषों की मर्दानगी को चुनौती देनी वाली मान्यताएं –

- ..... काम ..... जाति का है।
- लड़का होकर ..... काम नही कर सकता।
- मर्दानगी का वहश
- पराये मर्द के साथ आना–जाना और तुम .....
- पराये घर की बेटी ने कब्जे में कर लिया।
- ससुराल वालों की बात सुनना।
- दूसरे मर्द के साथ बातचीत

- मर्द हो और अभी तक एक भी बच्चा नही
- बड़े होने के नाते सहयोग नही कर सकते
- गाली देता है पिटाई क्यो नही करते?
- पत्नी को संभाल नही सकते
- निरवश/नामर्द
- महिला की जांच पहले.....
- सिर में चढ़ाकर रखना
- लड़की ने अपनी पंसद ..... सारा खर्च लड़के वाले उठाये
- बेटा न होने पर अंतिम संस्कार कौन करेगा?

सत्र 5 – फिल्म (पिता, पुत्र और धर्मयुद्ध) प्रदर्शन व परिचर्चा

कार्यक्रम के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों को पिता, पुत्र और धर्मयुद्ध फिल्म दिखाई गई। फिल्म के बाद दिन भर की चर्चाओं के आधार पर पुरूषों द्वारा फिल्म का विश्लेषण किया गया। चर्चा से निकले महत्वपूर्ण बिन्दु निम्न प्रकार से रहे –

- सभी धर्मो में पुरूषों की हिंसात्मक छवि को बढ़ावा दिया गया है।
- विभिन्न धार्मिक आडम्बरों का सहारा लेते हुए महिलाओं के साथ हिंसा को जायज ठहराने का प्रयास किया गया है।
- महिलाओं को छवि को सेवा करने वाली के रूप में तथा पुरूषों को समाज व धर्म का ठेकेदार दिखाने का प्रयास किया गया है।
- जो महिलाएं अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास करती है उन्हें धर्म विरोधी बताया जाता है।
- मर्दो के लिए ऊॅची आवाज में बात करना तथा महिलाओं को नीचा दिखाने के लिए यौनिकता आधारित गालियों को बढ़ावा दिया गया है।
- महिलाओं को हमेशा अलग–अलग तरीके से स्त्रीत्व की परीक्षा देने तथा पवित्रता को बनाये रखने का दबाव बनाया जाता है जबकि पुरूषों के लिए यह बात लागू नही होती।
- धर्म और राजनीति के गठजोड़ के आधार पर हमेशा दूसरे धर्म व कमजोर लोगों खासकर महिलाओं के साथ हिंसा को बढ़ावा दिया जाता है।

- सरकारी मशीनरी भी बहुसंख्यक समाज के दबाव में दूसरे धर्मो को दबाने व नीचा दिखाने में शामिल हो जाते हैं।

दिनांक – 30.05.17

सत्र 1 – पहले दिन का रिकैप

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन सर्वप्रथम गीत के माध्यम से चर्चा की शुरूआत की गई इसके बाद फैसलिटेटर द्वारा प्रतिभागियों के साथ पहले दिन हुई चर्चाओं का व्यक्तिगत रूप से रिकैप कराया गया। इस दौरान प्रतिभायिगों को अस्पष्ट रहे विषयों या जिन विषयों पर कोई कन्फूजन रहा है, उनको स्पष्ट किया गया।

सत्र 2 – भेदभाव आधारित सामाजिक मानकों को चुनौती देना/बदलाव

इस सत्र में प्रतिभागियों द्वारा जेण्डर भेदभाव व महिलाओं के साथ हिंसा को बढ़ावा देने वाली विभिन्न सामाजिक मान्यताओं को चिन्हित किया गया। इसके लिए प्रतिभागियों के साथ सामूहिक चर्चा करते हुए उन्हे बोर्ड पर लिखा गया। निकली हुए मान्यताएं किस प्रकार भेदभाव को बढ़ावा देती है इस पर समझ बनाने का प्रयास किया गया जो निम्न प्रकार से थी –

- लड़कियों की जल्दी शादी कर देना चाहिये क्योंकि ऊंची–नीच का डर रहता है।
- महिलाएं खेती का काम तो कर सकती हैं लेकिन हल नही चला सकती।
- महिलाओं की रक्षा करना पुरूषों की जिम्मेदारी है।
- परिवार चलाने के लिए पुरूषों का कमाना जरूरी है।
- महिलाओं को शालीन कपड़े पहनना चाहिये।
- महिलाओं व लड़कियों को अकेले घर के बाहर नही निकलना चाहिये।
- बच्चों की देखभाल करना महिलाओं की जिम्मेदारी है।
- शादी के बाद जितना जल्दी लड़कियां अपने घर चली जाय उतना अच्छा है।
- महिलाओं को परिवार की इज्जत का ख्याल रखना चाहिये।
- लड़कियों को जीन्स नही पहनना चाहिये।

फैसलिटेटर द्वारा स्पष्ट किया गया कि हमें इन सामाजिक मान्यताओं को बदलने के लिए समानता के साथियों को सही जानकारी व उनके नजरिये को बदलना होगा तथा बताना होगा कि ये कैसे भेदभाव व हिंसा को बढ़ावा देते हैं। इन मान्यताओं के कारण लड़कियां व महिलाएं आगे बढ़ने के मौको से वंचित हो जाती है तथा उनके साथ विभिन्न तरह की हिंसा की घटनाएं होती हैं जो उनके अधिकारों का हनन

है। समानता के साथियों को सामूहिक तौर पर समूह के स्तर पर दूसरे पुरूषों को तैयार करना होगा तथा इनको बदलने के लिए अपने आप को रोल मॉडल के तौर पर पेश करना होगा। यदि लड़कियों व महिलाओं के साथ घर व बाहर कहीं भी छेड़खानी या हिंसा होती है तो मिलकर विरोध करना होगा।

सत्र 3 – एक साथ राष्ट्रीय अभियान के बारे में

फेम के राज्य समन्वयक द्वारा 2016 से राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किये गये 'एक साथ' अभियान तथा झारखण्ड में फेम द्वारा चलाये जा रहे इस अभियान के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी को रखा गया। इसमें अभियान के मुद्दो, थीम, कोआर्डिनेशन समूह, प्रशिक्षण, पाठ्य सामग्री (पोस्टर, पम्फलेट, कैलेण्डर, पोस्टकार्ड, बैच, टीशर्ट, टोपी आदि) आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियो आदि के बारे में साझा किया गया। झारखण्ड के 13 जिलों में विभिन्न सदस्य सदस्थाओं द्वारा अभी तक किये गये प्रयासों के बाद चिन्हित किये गये समानता के साथियों तथा उनकी क्षमतावर्धन को लेकर किये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणो व तैयार की गई विभिन्न तरह की संदर्भ सामग्री के उपयोग आदि के बारे में चर्चा की गई।

सत्र 4 – मेन्टर की भूमिका – सामूहिक चर्चा के बाद प्रमुख रूप से निम्न भूमिकाएं निकलकर आई –

- समानता साथियों की सूची तैयार करना
- संशोधित सूची को फेम कार्यालय को भेजना
- गांव स्तर पर समानता के साथियों के साथ लगातार सम्पर्क बनाये रखना
- समानता के साथियों की बैठक के माध्यम से जानकारी व समझ बढ़ाना
- प्रकाशित सामग्री को उपलब्ध कराना तथा उनके साथ चर्चा करना
- समानता के साथियों को भेजे जाने वाले मैसेज पर उनकी प्रतिक्रिया को लेना
- बदलाव की प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं व चुनौतियों पर मदद करना
- समानता के साथियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना
- बदलाव की कहानियों को लिखना व फेम को भेजना

सत्र 5 – जिला स्तरीय नियोजन

दो दिवसीय प्रशिक्षण में शामिल प्रतिभागियों को अपने–अपने जिले में अभियान के दौरान चिन्हित किये गये समानता साथियों व जिला फोरम के नये सदस्यों के साथ एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित करने का नियोजन किया गया। इसके लिए सभी साथियों से आग्रह किया गया कि वे वापस जाने के बाद संस्था के अन्य साथियों के साथ चर्चा कर तारीख व जगह का चयन कर इसकी सूचना फेम कार्यालय को भेज देगें ताकि राज्य कार्यालय से फातमी जी जाकर जरूरी मदद कर सकें। जिला स्तर पर आयोजित किये जाने वाले इस प्रशिक्षण के माड्यूल को तैयार कर भेजने की जिम्मेदारी सी0एच0एस0जे0 ने ली।

सत्र 6 – बदलाव को चिन्हित करना व दस्तावेजीकरण

मेन्टर बदलाव को चिन्हित करेगें व उनकी कहानियों को लिखेगें। इसके लिए सी0एच0एस0जे0 की ओर से स्मिती शाक्या द्वारा दस्तावेजीकरण क्या है, इसका महत्व, बदलाव को कैसे लिखेगें आदि पर पावर प्वाइन्ट प्रस्तीकरण के माध्यम से विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए समझ बनाने का प्रयास किया गया।

सत्र 7 – फीडबैक व समापन

मूड रीडर – दो दिवसीय प्रशिक्षण के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों की बनी सीख व समझ को जानने के लिए उनका फीडबैक लिया गया। इसके लिए चार्ट में तीन चित्र बनाते हुए प्रतिभागियों को किसी एक पर टिक लगाकर अपनी फीडबैक देने के लिए कहा गया। फीड बैक निम्न प्रकार से रहा।

1. अच्छा – 06
2. बहुत अच्छा – 18
3. सामान्य – 02

इसके बाद सभी प्रतिभागियों को फैसलिटेटर द्वारा जेण्डर समानता के लिए शपथ दिलाते हुए दो दिवसीय प्रशिक्षण का समापन धन्यवाद करते हुए किया गया।

संदर्भ व्यक्ति :–

1. अरूण कुमार, फेम कोर समूह सदस्य, गिरीडीह
2. शंकर रवानी, फेम, धनबाद
3. महेन्द्र कुमार, सी0एच0एस0जे0,रांची
4. हुसैन इमाम फातमी, फेम सचिवालय, रांची
5. स्मिती शाक्या, सी0एच0एस0जे0,नई दिल्ली